पद ८

(राग: भैरवी - ताल: त्रिताल)

प्रीति या पायीं जडो जडो रे प्रभू ।।ध्रु.।। घडो तरी मजला साधूची सेवा। भजन हें कार्नी पडो पडो रे।।१।। माणिक म्हणे प्रभु अन्यथा वदतां। जिव्हा ही समूळ झडो झडो रे।।२।।